पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.3.2013 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट
के तत्वावधान में
स्वामी दीक्षानन्द जी
10वां स्मृति दिवस
रविवार, 12 मई 2013
सायं 4.00 बजे से 7.15 बजे तक
स्थान: योग निकेतन सभागार,
वैस्ट पंजाबी बाग, रोड न. 78, दिल्ली
डॉ. अनिल आर्य-दर्शनअग्निहोत्री

वर्ष-29 अंक-20 चैत्र-2069 दयानन्दाब्द 190 16 मार्च से 31 मार्च 2013 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.3.2013, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

189 वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर कृतज्ञ राष्ट्र ने किया नमन

स्वतन्त्रता आन्दोलन के सूत्रधार थे महर्षि दयानन्द- डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा

महर्षि दयानन्द के आदर्शों को जीवन में अपनायें- भगतसिंह कोशयारी

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए। द्वितीय चित्र में मुख्य अतिथि डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा एवं श्री भगतसिंह कोशयारी का अभिनन्दन करते हुए डॉ. अनिल आर्य, श्री माया प्रकाश त्यागी, श्रीमती प्रवीण आर्या।

नई दिल्ली। बृहस्पतिवार, 7 मार्च 2013, केन्द्रीय आर्य युवक-परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, महान समाज सुधारक, युग प्रवर्तक, आर्य समाज के संस्थापक ''महर्षि दयानन्द सरस्वती का 189वां जन्म दिवस'' हिन्दी भवन, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली में सौल्लास मनाया गया। समारोह में दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों से सैकड़ों आर्य जनों ने सम्मिलित होकर महर्षि दयानन्द को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये व उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।

समारोह के मुख्य अतिथि डा. विजय कुमार मल्होत्रा, (नेता प्रतिपक्ष, दिल्ली विधान सभा) ने कहा कि स्वामी दयानन्द महान क्रांतिकारी थे। उन्होंने आजादी के आन्दोलन में महती भूमिका निभायी उनसे प्रेरणा पाकर असंख्य नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। उनके समाज उत्थान में योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता चाहे नारी शिक्षा, विधवा विवाह, बाल विवाह, पाखण्ड-अन्धविश्वास के विरूद्ध शंखनाद हो हर क्षेत्र में उनकी छाप दिखाई देती है। उन्होंने कहा कि क्रान्ति केवल हथियारों से नहीं होती अपितु वैचारिक व सामाजिक क्रान्ति भी होती है। स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' से पूरे समाज में आमूल चूल परिवर्तन किये तथा विश्व को एक नयी दिशा प्रदान की।

इस समारोह में श्री भगतसिंह कोशयारी (सांसद व पूर्व मुख्यमन्त्री, उत्तराखण्ड), ने कहा कि महर्षि दयानन्द राष्ट्र नायक थे, जब सब ओर अन्धकार छाया था, उन्होंने कुरीतियों, अन्धविश्वासों, रूढ़ियों, मठाधीशों पर सीधा प्रहार किया जिसके लिए साहस की जरूरत होती है। स्वामी दयानन्द ने जिस तेजस्विता के साथ समाज की दिशा बदली वह समय के साथ आज मन्द हो गयी है उसे पुन: जागृत करने की आवश्यकता है। समारोह अध्यक्ष ऐमिटी विश्वविद्यालय के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार चौहान, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य तथा वैदिक विद्वान आचार्य वागीश जी (गुरुकुल एटा), सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, कर्नल तेजेन्द्रपाल त्यागी, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, दर्शन अग्निहोत्री, आचार्य महेन्द्र भाई, अरूण अग्रवाल ने अपने-अपने विचार प्रकट किए।

अंकित उपाध्याय व प्रवीन आर्य के मधुर भजन हुए। आर्य नेता रविन्द्र मेहता, रवि चड्डा, सोहन लाल मुखी, जितेन्द्र डावर, यशोवीर आर्य, धर्मपाल आर्य, देवेन्द्र भगत, चतरसिंह नागर, के.एल. राणा प्रकाशवीर शास्त्री, डॉ. आर.के. आर्य, सन्तोष शास्त्री, गायत्री मीना, रामचन्द्र कपूर, सुरेन्द्र शास्त्री, विजयारानी शर्मा, लक्ष्मी सिन्हा, महेन्द्र बूटी, अमरनाथ बत्रा, जगदीश शरण आर्य, अर्चना पुष्करना आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

कर्नल तेजेन्द्र पाल त्यागी (अध्यक्ष, राष्ट्रीय सैनिक संस्था) का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य, डॉ. आर.के. आर्य, श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री मायाप्रकाश त्यागी व श्री मनोहर लाल चावला। द्वितीय चित्र में वीरवार कार्य दिवस होने पर भी खचाखच भरा आर्य श्रद्धालुओं से सभागार।

रंगों का त्यौहार होली

–अविनाश आर्य

होली हमारा एक प्रमुख पर्व है। होली एक ओर तो बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक के रूप में मनाई जाती है तो दूसरी ओर रंगों तथा हास्य के पर्व के रूप में। विशेष रूप से फाग या रंगोत्सव के रूप में यह होलिका दहन की रात्रि के पश्चात् अगले दिन मनाई जाती है। रंगों के बिना होली की कल्पना भी नहीं की जा सकती। विभिन्न रंगों का त्यौहार है होली। एक रंग खान-पान का है तो दूसरा रंग है गायन-वादन और मोज-मस्ती का। लेकिन होली का जो सबसे प्रमुख रंग है वह है नीले, पीले, हरे, गुलाबी आदि असंख्य रंगों का रंग। स्त्री-पुरुष, छोटे-बड़े, बूढ़े-जवान सभी रंगों से सराबोर हो जाना चाहते हैं। होली के रंगों का आकर्षण ही ऐसा होता है कि हम न केवल दूसरों को ही नीले, पीले, हरे, गुलाबी रंगों में रंगे देखना चाहते हैं अपितु स्वयं भी इन रंगों में रंग जाना चाहते हैं, रंगीन पानी में तर-ब-तर हो जाना चाहते हैं।

रंग हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। अपेक्षित रंगों द्वारा नकारात्मक घातक मनोभावों पर नियंत्रण कर उन्हें सकारात्मकता प्रदान करना संभव है। रंगों का हमारे मनोभावों पर और हमारे नोभावों का हमारे शरीर पर गहरा असर पड़ता है। हर व्यक्ति का अपना एक पसंदीका रंग होता है जिसका विभिन्न रूपों में प्रयोग कर उसे खुशी मिलती है। फाग या रंगोत्सव उसे यह अवसर प्रदान करता है होली के अवसर पर हर व्यक्ति अपने पंसदीका रंग खरीदकर दूसरों को लगाता है जिससे उसे आनन्द की अनुभूति होती है और यह आनन्दानुभूति अनेक व्याधियों के उपचार में सहायक होती है।

वैसे भी होली का संबंध प्रकृति और प्राकृतिक रंगों से है। होली तक वंसत ऋतु दस्तक दे चुकी होती है। चारों ओर रंग-बिरंगे मोहक व मादक फूलों का साम्राज्य स्थापित हो चुका होता है। होली के रंग हमें प्रकृति से एकाकार कर देते हैं। रंगों के साथ ही होली पर पानी का प्रयोग भी खूब किया जाता है जो हमें प्रकृति के मूल तत्त्वों अर्थात् पंचभूत से जोड़ने में सहायक होता है। विश्व में अनेक स्थानों पर होली ही नहीं अनेक अन्य पर्वों अथवा अवसरों पर भी रंगों और पानी का भरपूर इस्तेमाल किया जाता है।

होली पर रंगों का इस्तेमाल कई प्रकार से किया जाता है। गुलाल या अबीर के रूप में सूखा रंग एक दूसरे के चेहरे और बदन पर मलते हैं, अथवा रंगीन पानी से एक दूसरे को भिगोते हैं। नंदगांव और बरसाने की लट्ठमार होली के साथ-साथ ब्रज की फूलों की होली भी बहुत प्रसिद्ध है। फूलों की होली में रंगों की बजाय विभिन्न फूलों की रंग-बिरंगी व सुर्गंधित पंखुड़ियों की एक दूसरे पर वर्षा की जाती है। फूलों की होली के अतिरिक्त एक दूसरे के मस्तिष्क पर सुगंधित वनस्पतियों अथवा अन्य द्रव्यों का लेप लगाने का प्रचलन तैयार किया जाता है जो गुलाल की तरह प्रयोग में लाया जा सकता है। यह त्वचा के लिए भी उत्तम माना गया है। हिबिस्कस अथवा गुड़हल के फूलों को छांव में सुखाकर और उसका बारीक पाउडर बनाकर भी लाल रंग के गुलाल की तरह प्रयोग में लाया जाता है। रक्त चंदन को पानी में उबालकर भी गीला लाल रंग तैयार किया जा सकता है।

वसंत के अंत अथवा ग्रीष्म के प्रारंभ में जब पलाश अथवा ढाक के पेड़ों पर नारंगी रंग के फूल खिलते हैं तो जैसे सारे जंगल में आग सी लग जाती है। इसीलिए अंग्रेजी में पलाश अथवा ढाक को 'फ्लेम ऑफ द फॉरेस्ट' कहा जाता है। पलाश, ढाक अथवा टेसू का होली से गहन रिश्ता है। इसके फूलों से बना रंग होली खेलने वालों का सबसे पंसदीका रंग है। टेसू के फूलों को छांव में सुखाकर रख लेते हैं। खुशबूदार पीला-नारंगी रंग तैयार करने के लिए टेसू के फूलों की सूखी पंखुड़ियों को या तो रात भर पानी में भिगोकर रख देते हैं या फिर उबाल लेते हैं। नारंगी रंग के लिए इसके सूखे हुए फूलों का पाउडर भी बनाया जाता है।

लाल और पीले रंगों के साथ हरा रंग न हो तो भी बात नहीं बनती। हरा रंग प्रकृति में खूब मिलता है। पेड़-पौधों की पत्तियां प्राय: हरे रंग की ही होती हैं। सूखा हरा रंग बनाने के लिए मेंहदी की पत्तियों का पाउडर इस्तेमाल किया जा सकता है। इसे आटे, मैदा, अरारोट अथवा सिंघाड़े के आटे में मिलाकर भी प्रयोग में ला सकते हैं। मेंहदी की पत्तियों की तरह ही गुलमोहर के पेड़ की पत्तियों को भी सुखाकर और पाउडर बनाकर गुलाल की तरह से इस्तेमाल किया जा सकता है। गीहरा हरा रंग बनाना हो, तो पालक, धनिया, पुदीना आदि अन्य हरे रंग की पत्तियों का पेस्ट बनाकर पानी में मिला लिया जाता है।

नीली गुलमोहर अथवा जैकेरैडा के फूलों को छांव में सुखाकर पाउडर बना लें तो नीला गुलाल मिल सकता है। हम कपड़ों में सफेदी के लिए जो नील देते हैं वह नील के पौधों से प्राप्त होता है। उन्हीं नील के पौधों पर लगने वाले फलों को मसलकर पानी में घोलकर हम नीला रंग तैयार कर सकते हैं। नील के पौधों की पत्तियों अथवा जैकेरेंडा के फूलों को पानी में उबलने से भी नीला रंग तैयार हो जाता है।

आपने सलाद के लिए चुकंदर तो अवश्य ही काटी होगी। काटते-काटते हाथ लाल हो जाते हैं। चुकंदर से होली के लिए आकर्षक लाल-मजेंटा रंग तैयार करना बड़ा आसान है। बस चुकंदर को बारीक-बारीक काटकर पानी में भिगो दें या उबाल लें। प्याज के छिलकों को उबालने से भी अच्छा-खासा रंग तैयार हो जाता है। चाय की पत्ती से तो आपका रोज वास्ता पड़ता है। चाय की पत्ती को भी होली का रंग बनाने के लिए इस्तेमल किया जा सकता है। चाय की पत्ती के अलावा कत्थे से भी कत्थई रंग बनाया जा सकता है। काला रंग बनाने के लिए सूखे आंवलों को लोहे की कड़ाही में उबालकर पानी में मिला लें। इस तरह और भी कई रंग तैयार किये जा सकते हैं।

इस तरह से तैयार प्राकृतिक रंग न केवल सुरक्षित होते हैं, अपितु शरीर के लिए लाभदायक भी होते हैं। क्योंकि इनका निर्माण विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों, जड़ी-बुटियां अथवा वनस्पतियों और फल-फूलों से किया जाता है इसलिए इनका उपचारक औषधीय प्रभाव भी हम पर पड़ता है। ये प्राकृतिक सुगंध से भरपूर होते हैं अत: मन को भाते हैं। इनकी गंध भी हमारे उपचार में सहायक होती है, अर्थात् ये एरोमाथैरेपी का रोल भी अदा करते हैं। इनका सबसे बड़ा लाभ ये है कि ये हमारे पर्यावरण को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाते।

कहा गया है :-

दर्दे-सर के वास्ते चंदन लगान है मुफीद,
उसको घिसना और लगाना दर्दे-सर ये भी तो है।

इस प्रकार के हर्बल या प्राकृतिक रंगों को बनाना आज के जमाने में सचमुच दर्दे-सर अथवा एक बहुत बड़ा झमेला ही है लेकिन इससे न केवल घातक रसायनों से मुक्ति मिल जाती है, अपितु इस प्रक्रिया में सृजन को जो सुख निहित है वह भी अद्वितीय है। यह क्रिएटिविटी हमें एक नई ऊर्जा से भर देती है। हमारा स्वास्थ्य अच्छा हो जाता है। इस दर्दे-सर में भी एक नया आनन्द है। इस प्रक्रिया में न केवल हमारे पर्यावरण का बचाव है, अपितु इसमें हमारे स्वयं के स्वास्थ्य की रक्षा भी विद्यमान है। तो आइये संकल्प लें कि होली खेलनी है तो प्राकृतिक रंगों से हर्बल होली ही खेलें।

आया होली का त्यौहार

समता-समृद्धि व समरसता,
का देता नूतन संदेश।
रंग-बिरंगा बना हुआ है,
प्रकृति सुन्दरी का परिवेश
जाति-वर्ग का भेद मिटाकर,
करें परस्पर सद्व्यवहार।
आया होली का त्योहार।।

छुआछूत है कोढ़ हमारा,
इसको आगे बढ़े, मिटाएं।
जो हैं पिछड़े-दलित कहाते
उन सबको हम गले लगाएं।
सब जन हों संगठित यहां पर
बढ़े एकता का आधार।
आया होली का त्योहार।।

जाति-पांति के बन्धन टूटें,
एक सूत्र में बंधे समाज।
राष्ट्र भक्ति की जगे भावना,
राष्ट्र समर्पित हम हो आज।
राम-कृष्ण के, दयानन्द के
स्वप्न सुनहरे हों साकार।
आया होली का त्योहार।।

बढ़े प्रगति पथ कदम हमारे,
सौख्य सदाशयता हो जाग्रत।
हृदय-हृदय की दूरी कम हो,
परहित में हों, हम सब रत।
नव जागृति का, नवल चेतना
का फिर खिले शुचिर अभिसार।
आया होली का त्योहार।।

ऋषि बोधोत्सव से जीवन-बोध का सन्देश

–श्री बालकृष्ण गुप्ता

शिवरात्रि जीवन-बोध का सार्थक पर्व है, आत्म चिन्तन का अवसर है, फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी की रात्रि में मूल शंकर का हृदय कण-कण में व्याप्त कल्याणकारी शिव का वास्तविक मूल जानने और पाने को व्याकुल हो उठा। मूल शंकर शिव रात्रि की रात जागने के बाद जीवन भर कभी चैन से नहीं सोया। शिव और अशिव की जानने की प्रबल जिज्ञासा उसके हृदय में थी। कर्म में पुरुषार्थ था। अन्तत: जीवन का सत्य आत्मबोध तथा जीवन को प्राप्य शिव को प्राप्त किया। इसी शिवरात्रि पर हम जीवन के सत्य स्वरूप का बोध करें जिससे जीवन का मूल उद्देश्य और प्रयोजन जोड़ दें।

शिव रात्रि आर्य समाज के बीजांकुर का प्रथम दिन है, इसीलिए आर्य समाज और आर्यजनों के लिए इसका ऐतिहासिक महत्व है। यदि ऋषि दयानन्द के जीवन में शिव रात्रि सत्य को लेकर न आती तो मूलशंकर दयानन्द न बनते। यदि दयानन्द न होते तो आर्य समाज न होता। यदि आर्य समाज न होता तो वैदिक धर्म का सत्य स्वरूप दृष्टि गोचर न होता। हम लोग न जाने कितने दुर्गुणों, दुर्व्यसनों, अन्धविश्वासों में पाखण्ड और गुरुडम आदि के जाल में फंसे होते। आर्य समाज के इतिहास में शिवरात्रि का दिन सदैव स्मरणीय व वन्दनीय रहेगा। यह आर्य समाज के लिए 'बोधोत्सव' है। आत्म ज्ञान और प्रकाश का महोत्सव है।

अन्दर के कपाट खोलिए-यह शिवरात्रि हमें, आत्म बोध, सत्य बोध, कतर्व्य बोध और दिशा बोध करने के लिए प्रतिवर्ष आती है। इतिहास साक्षी है कि छोटी-छोटी बातों, घटनाओं, प्रेरक प्रसगों और उपदेशों ने जीवन बदल दिये। पतित जीवन से पवित्र जीवन हो गये। महर्षि के एक वाक्य ने कि "अमीरचन्द जी, हो तो तुम हीरा किन्तु कीचड़ में पड़े हो।" अमीरचन्द को अपनी पहचान करा दी। गुरुदत्त सरीखे नास्तिकों को आस्तिक बना दिया और न जाने कितने दुर्व्यसनी मुंशी रामों को श्रद्धानन्द स्वामी बना दिया। यह तब होता है जब अन्दर के कपाट खुले हों। संकल्प में वेदना हो।

आज के जल से जुलूस, उत्सव, कथा, सत्संग आदि सभी बाहर की दुनिया में घट रहे हैं। आवश्यकता है बाहर की दुनिया से अन्दर की दुनिया में आने की। भोग से योग की ओर चलने की। शरीर से आत्मा की ओर उठने की। प्रकृति में परमात्मा को झाँकने की। यह शिवरात्रि है जो हमारा कल्याण कर सकती है।

किन्तु मूल्यांकन न कर पाने के कारण हम दु:खी हैं। इधर-उधर भटक रहे हैं। शिवरात्रि हमें आत्म बोध कराती है।

आर्य समाज का जीवन दर्शन-आर्य समाज का जीवन दर्शन अपने में बहुत ही प्रामाणिक, व्यावहारिक तथा पूर्णता लिये है। जहाँ सेवा, त्याग, प्रेम, सहयोग, मिशनरी भावना आदि होने चाहिए थे, वहाँ स्वार्थ, पदलिप्सा, सुख-सुविधा, अहंकार, कमाई की भावना आदि पतित भाव घर करते जा रहे हैं। इसी से बिखराव, उदासीनता, असहयोग व रिक्तता फैल रही है। ये पर्व हमें सचेत करने आते हैं। कि हम आत्म चिन्तन करें। हमने क्या पाया?क्या खोया?यह बोध रात्रि, यह शिवरात्रि कह रही है-अपने को टटोल कर देखो। ज्ञान-चक्षु को खोलकर देखो।

यह तिथि श्रेष्ठ संकल्पों, श्रोत्रों और आत्म बोध करने का पर्व है। जड़ पूजा से चेतन पूजा की ओर चलने का सुअवसर है। आज भोगवादी और भौतिक वादी विचारधारा में तेजी से हावी हो रही है। देह पूजा बढ़ रही है, आत्म चिन्तन घट रहा है। तेजी से मूल्य मर्यादायें, नैतिकता और प्रेरक आदर्श तोड़े और छोंड़े जा रहे हैं। धर्म घट रहा है, सम्प्रदाय बढ़ रहें हैं। अविद्या, ढोग, पाखण्ड तथा प्रदर्शन बढ़ रहे हैं। पूजा, प्रार्थना, धर्म, भक्ति, परमात्मा, मन्दिर आदि व्यापार का रूप ले रहें हैं।

अत: आज आवश्यकता इस बात की है कि ऋषि द्वारा आर्य समाज रूपी विरासत और अमूल्य थाती जो हमें सौंपी गयी है, हमारे पास जो प्रभु की अमर वेद वाणी का सन्देश और अमर उपदेश है, उसे देश के कोने-कोने ही में नहीं अपितु सारे संसार को सत्य दिशा देना है। यदि ऋषि को सच्ची श्रद्धांजलि देनी है, तो हम पहले स्वयं सच्चे आर्य बने फिर आर्य समाज और दयानन्द जी के मिशन को आगे बढ़ने में प्राण-पण से जुटें। यही शिवरात्रि का सन्देश है।

–प्रबन्धक, आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कॉलेज, हरदोई

भगत सिंह भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी

भगत सिंह भारत के एक प्रमुख स्वतंत्राता सेनानी थे। भगतसिंह ने देश की आजादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया, वह आज के युवकों के लिए एक बहुत बड़ा आदर्श है। इन्होंने केन्द्रीय संसद (सेण्ट्रल असेम्बली) में बम फेंककर भी भागने से मना कर दिया। जिसके फलस्वरूप इन्हें 23 मार्च, 1931 को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फाँसी पर लटका दिया गया। सारे देश ने उनके बलिदान को बड़ी गम्भीरता से याद किया।

उस समय भगत सिंह करीब 12 वर्ष के थे जब जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ था। इसकी सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से 12 मील पैदल चलकर जलियाँवाला बाग पहुँच गये। इस उम्र में भगत सिंह अपने चाचाओं की क्रान्तिकारी किताबें पढ़ कर सोचते थे कि इनका रास्ता सही है कि नहीं ? गांधी जी का असहयोग आन्दोलन छिड़ने के बाद वे गान्धी जी के अहिंसात्मक तरीकों और क्रान्तिकारियों के हिंसक आन्दोलन में से अपने लिये रास्ता चुनने लगे। गान्धी जी के असहयोग आन्दोलन को रद्द कर देने के कारण देश के तमाम नवयुवकों की भाँति उनमें भी रोष हुआ और अन्तत: उन्होंने देश की स्वतन्त्राता के लिये क्रान्ति का मार्ग अपनाना अनुचित नहीं समझा। उन्होंने जुलूसों में भाग लेना प्रारम्भ किया तथा कई क्रान्तिकारी दलों के सदस्य बने।

1928 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिये भयानक प्रदर्शन हुए। इन प्रदर्शनों मे भाग लेने वालों पर अंग्रेजी शासन ने लाठी चार्ज भी किया। इसी लाठी चार्ज से आहत होकर लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गयी। अब इनसे रहा न गया। एक गुप्त योजना के तहत इन्होंने पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट स्काट को मारने की योजना सोची। सोची गयी योजना के अनुसार भगत सिंह और राजगुरु लाहौर कोतवाली के सामने व्यस्त मुद्रा में टहलने लगे। उधार जयगोपाल अपनी साइकिल को लेकर ऐसे बैठ गये जैसे कि वो खराब हो गयी हो ।

17 दिस्मबर 1928 को करीब सवा चार बजे, स्काट की जगह, ए. एस. पी. साण्डर्स के आते ही राजगुरु ने एक गोली सीधी उसके सर में मारी जिसके तुरन्त बाद वह होश खो बैठा। इसके बाद भगत सिंह ने 3-4 गोली दाग कर उसके मरने का पूरा इन्तजाम कर दिया। ये दोनों जैसे ही भाग रहे थे कि एक सिपाही चनन सिंह ने इनका पीछा करना शुरू कर दिया। चन्द्रशेखर आजाद ने उसे सावधान किया- ''आगे बढ़े तो गोली मार दूँगा।'' नहीं मानने पर आजाद ने उसे गोली मार दी। इस तरह इन लोगों ने लाला लाजपत राय की मौत का बदला ले लिया।

जेल में भगत सिंह ने करीब 2 साल रहे। इस दौरान वे लेख लिखकर अपने क्रान्तिकारी विचार व्यक्त करते रहे। जेल में रहते हुए उनका अध्ययन बराबर जारी रहा। उनके उस दौरान लिखे गये लेख व सगे सम्बन्धियों को लिखे गये पत्र आज भी उनके विचारों के दर्पण हैं। अपने लेखों में उन्होंने कई तरह से पूँजीपतियों को अपना शत्रु बताया है। उन्होंने लिखा कि मजदूरों का शोषण करने वाला चाहें एक भारतीय ही क्यों न हो, वह उनका शत्रु है। उन्होंने जेल में अंग्रेजी में एक लेख भी लिखा जिसका शीर्षक था मैं नास्तिक क्यों हूँ? जेल में भगत सिंह व उनके साथियों ने64 दिनों तक भूख हडताल की। उनके एक साथी यतीन्द्रनाथ दास ने तो भूख हड़ताल में अपने प्राण ही त्याग दिये थे।

23 मार्च 1931 को शाम में करीब 7 बजकर 33 मिनट पर भगत सिंह तथा इनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरु को फाँसी दे दी गई। फाँसी पर जाने से पहले वे लेनिन की नहीं बल्कि राम प्रसाद बिस्मिल की जीवनी 4, पढ़ रहे थे जो सिन्ध (वर्तमान पाकिस्तान का एक सूबा) के एक प्रकाशक भजन लाल बुकसेलर ने आर्ट प्रेस, सिन्ध से छापी थी। कहा जाता है कि जेल के अधिकारियों ने जब उन्हें यह सूचना दी कि उनके फाँसी का वक्त आ गया है तो उन्होंने कहा था- 'ठहरिये! पहले एक क्रान्तिकारी दूसरे से मिल तो ले।' फिर एक मिनट बाद किताब छत की ओर उछाल कर बोले - 'ठीक है अब चलो।'

फाँसी पर जाते समय वे तीनों मस्ती से गा रहे थे -
मेरा रँग दे बसन्ती चोला, मेरा रँग देय
मेरा रँग दे बसन्ती चोला। माय रँग दे बसन्ती चोला।।

।। ओ३म्।।

तेरा वैभव सदा रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें

प्रण करते हैं संस्कृति की शाम नहीं होने देंगे, वीर शहीदों की समाधि बदनाम नहीं होने देंगे।
जब तक तन में एक बूंद भी लहु की बाकी है, भारत की आज़ादी को गुमनाम नहीं होनें देंगे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली
के तत्वावधान में

अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 82वें बलिदान दिवस पर
शहीदो की अमानत हैं – भारत की आजादी

राष्ट्र रक्षा यज्ञ व आतंकवाद विरोधी दिवस

शनिवार, 23 मार्च 2013, प्रात: 10:00 बजे से 1:30 बजे तक
स्थान : जन्तर मन्तर रोड़, नई दिल्ली-110001

अध्यक्षता: आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ● यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य कुंवरपाल शास्त्री

मुख्य वक्ता

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी — श्री जयभगवान गोयल — श्री बैकुण्ठलाल शर्मा प्रेम
श्री मायाप्रकाश त्यागी — डॉ. वीरपाल विद्यालंकार — आचार्य वीरेन्द्र विक्रम
श्री ओमप्रकाश त्रेहन — आचार्य गवेन्द्र शास्त्री — श्री मनोहरलाल चावला
श्रीमती रचना आहूजा — श्री बलराज सेजवाल — श्री वीरेन्द्र योगाचार्य
श्रीमती उर्मिला आर्या — श्रीमती गायत्री मीना — श्रीमती प्रभा सेठी

आमन्त्रित आर्य नेता : सर्वश्री रामकृष्ण सतीजा, डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, रविन्द्र मेहता, आ. प्रकाशवीर शास्त्री, श्री नरेन्द्र आर्य सुमन, डॉ. ओमप्रकाश मान, जितेन्द्र डावर, चतरसिंह नागर, दुर्गाप्रसाद कालरा, अर्चना पुष्करणा, बिम्मी अरोड़ा, कांतीप्रकाश आर्य, जितेन्द्रसिंह आर्य, कृष्णगोपाल दीवान, राजेश मेहन्दीरत्ता, सुरेन्द्र शास्त्री, नीता खन्ना, वेदप्रभा बरेजा, आशा गुप्ता, अन्जु जावा, सन्तोष वधवा, विजयारानी शर्मा, लक्ष्मी सिन्हा, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, संगीता गौतम, ओमवती गुप्ता, विश्वनाथ आर्य, कै.अशोक गुलाटी, उमा मोंगा, सरिता डावर, विजय चोपड़ा, सरला वर्मा, सत्यदेव वर्मा, पुष्पलता वर्मा, देवदत्त आर्य, महावीरसिंह आर्य, सी.एल.मोहन, अमीरचन्द रखेजा, पंडित सुरेश झा, मुकेश सुधीर, यज्ञवीर चौहान, विनोद बजाज, जगदीश मलिक, डा. दयानन्द आर्य, बलजीत आदित्य, अनुराग मिश्रा, यज्ञशरण कुलश्रेष्ठ, प्रभा ग्रोवर, राज चावला, स्वर्ण गम्भीर, विजय गुप्त, विजय सचदेवा, गोपाल जैन, दिनेश आर्य, वेदप्रकाश आर्य, वी.के. रैल्ली, हरिचन्द आर्य, सुमन नागपाल, आचार्य सुधांशु, चन्द्रमोहन कपूर, सरोज भाटिया, मकेन्द्र कुमार, रामहेत आर्य, विनोद कद, अमरनाथ बत्रा, सुभाष वधवा, संजीव आर्य, मानवेन्द्र शास्त्री, रमेश योगी, प्रेमकान्त बत्रा, रविदेव गुप्ता, रवि चड्डा, राजेन्द्र लाम्बा, गजेन्द्र चौहान, ओमवीरसिंह, विजय सब्बरवाल, महेन्द्रसिंह चौहान, ऋषिपाल शास्त्री, सुधा वर्मा, ओमप्रकाश सेठी, लाला मेघराज आर्य, हरिचन्द स्नेही, बिम्मी अरोड़ा, सत्यपाल सैनी।

आतंकवाद के विरूद्ध अपना रोष प्रकट करने के लिए साथियों सहित भारी संख्या में पहुंचे

-: निवेदक :-

डा.अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष) — यशोवीर आर्य (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष) — राकेश भटनागर (राष्ट्रीय मंत्री) — प्रवीन आर्य (राष्ट्रीय मंत्री) — रामकुमार सिंह (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष)
कृष्णचन्द पाहूजा (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष) — दुर्गेश आर्य (राष्ट्रीय मंत्री) — धर्मपाल आर्य (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष) — सुरेश आर्य (राष्ट्रीय मंत्री) — देवेन्द्र भगत (प्रेस सचिव)

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007 - फोन : 9810117464, 9958889970, 9868064422

रामसेतु को ऐतिहासिक धरोहर घोषित करो

रविवार 3 मार्च 2013 यूनाइटेड हिन्दु फ्रंट के तत्वावधान में रामसेतु की रक्षा करने एवं उसे ऐतिहासिक धरोहर घोषित करने की मांग को लेकर नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर विशाल प्रदर्शन किया गया। कालका जी मन्दिर के महन्त श्री सुरेन्द्र जी, राष्ट्रवादी शिवसेना के प्रमुख श्री जय भगवान गोयल, डॉ. अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली), श्री संदीप आहुजा आदि अनेकों हिन्दु नेताओं ने सम्बोधित किया एवं राष्ट्रपति महोदय को ज्ञापन भी दिया गया।

189वां स्वामी दयानन्द जन्मोत्सव सम्पन्न

वैदिक विद्वान आचार्य वागीश जी का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री माया प्रकाश त्यागी। द्वितीय चित्र में आर्य समाज पटेल नगर के मन्त्री श्री राजीव कान्त व श्रीमती अनिता कुमार का अभिनन्दन करते तथा तृतीय चित्र में श्री सुरेन्द्र कोचर का अभिनन्दन का दृश्य।

श्री जयभगवान गोयल का स्वागत

आर्य नेता प्रो. कैलाश नाथ सिंह का निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री, पूर्व सांसद, उत्तर प्रदेश के पूर्व शिक्षा मन्त्री, उत्तर प्रदेश के नेता विरोधी दल प्रो. कैलाश नाथ सिंह यादव का गत शनिवार दिनांक 9 मार्च 2013 को वाराणसी में निधन हो गया। डॉ. अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद) ने उनके निधन को राष्ट्र व आर्य समाज का अमूल्य क्षति बताया।

आर्य नेता स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी अग्निवेश, स्वामी आर्य वेश, श्री सत्यव्रत सामवेदी, श्री माया प्रकाश त्यागी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री गिरीश खौसला (अमेरिका), श्री मूलचन्द गुप्ता, डॉ. धर्मपाल आर्य, सरदार जोगिन्दर सिंह (एक्स डायरेक्टर सी.बी.आई), श्री प्रवीण आर्या आदि ने गहरा शोक व्यक्त किया है। - **महेन्द्र भाई, महामन्त्री**

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री सन्तोष गर्ग (संरक्षक आर्य समाज, सन्देश विहार, दिल्ली) का गत दिनों निधन हो गया।
2. श्री अभय राम आर्य (आर्य समाज, नजफगढ़, दिल्ली) का गत दिनों निधन हो गया।

प्रकाशनादि का विवरण फार्म-4

1. प्रकाशन स्थान	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
2. प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
3. मुद्रक व प्रकाशक का नाम	:	अनिल कुमार आर्य
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
4. सम्पादक का नाम	:	अनिल कुमार आर्य
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
5. उन व्यक्तियों के नाम, पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के हिस्सेदार हों।	:	केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजी.), दिल्ली

मैं अनिल कुमार आर्य एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 16-3-2013 **अनिल कुमार आर्य,** प्रकाशक

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970